



बढ़ते कदम

वर्ष-15
अंक-11
2017

पूर्व रेलवे, मालदा मंडल की सृजनात्मक हिन्दी ई-मासिकी

होली की शुभकामनाएं

भारत के संविधान में राजभाषा

राजभाषा अधिनियम, 1963

(यथासंशोधित, 1967)

(1963 का अधिनियम संख्यांक 19)

- (3) उपधारा (1) में अन्तर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी हिन्दी और अंग्रेजी भाषा दोनों ही--
- (i) संकल्पों, साधारण आदेशों, नियमों, अधिसूचनाओं, प्रशासनिक या अन्य प्रतिवेदनों या प्रेस विज्ञप्तियों के लिए, जो केन्द्रीय सरकार द्वारा या उसके किसी मंत्रालय, विभाग या कार्यालय द्वारा या केन्द्रीय सरकार के स्वामित्व में के या नियंत्रण में के किसी निगम या कम्पनी द्वारा या ऐसे निगम या कम्पनी के किसी कार्यालय द्वारा निकाले जाते हैं या किए जाते हैं ;
 - (ii) संसद के किसी सदन या सदनों के समक्ष रखे गए प्रशासनिक तथा अन्य प्रतिवेदनों और राजकीय कागज-पत्रों के लिए ;
 - (iii) केन्द्रीय सरकार या उसके किसी मंत्रालय, विभाग या कार्यालय द्वारा या उसकी ओर से या केन्द्रीय सरकार के स्वामित्व में के या नियंत्रण में के किसी निगम या कंपनी द्वारा या ऐसे निगम या कंपनी के किसी कार्यालय द्वारा निष्पादित संविदाओं और करारों के लिए तथा निकाली गई अनुज्ञप्तियों, अनुज्ञापत्रों, सूचनाओं और निविदा-प्ररूपों के लिए, प्रयोग में लाई जाएगी।
- (4) उपधारा (1) या उपधारा (2) या उपधारा (3) के उपबन्धों पर प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना यह है कि केन्द्रीय सरकार धारा 8 के अधीन बनाए गए नियमों द्वारा उस भाषा या उन भाषाओं का उपबन्ध कर सकेगी जिसे या जिन्हें संघ के राजकीय प्रयोजन के लिए, जिसके अन्तर्गत किसी मंत्रालय, विभाग, अनुभाग या कार्यालय का कार्यकरण है, प्रयोग में लाया जाना है और ऐसे नियम बनाने में राजकीय कार्य के शीघ्रता और दक्षता के साथ निपटारे का तथा जन साधारण के हितों का सम्यक ध्यान रखा जाएगा और इस प्रकार बनाए गए नियम विशिष्टतया यह सुनिश्चित करेंगे कि जो व्यक्ति संघ के कार्यकलाप के सम्बन्ध में सेवा कर रहे हैं और जो या तो हिन्दी में या अंग्रेजी भाषा में प्रवीण हैं वे प्रभावी रूप से अपना काम कर सकें और यह भी कि केवल इस आधार पर कि वे दोनों ही भाषाओं में प्रवीण नहीं हैं उनका कोई अहित नहीं होता है।
- (5) उपधारा (1) के खंड (क) के उपबन्ध और उपधारा (2), उपधारा (3) और उपधारा (4), के उपबन्ध तब तक प्रवृत्त बने रहेंगे जब तक उनमें वर्णित प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी भाषा का प्रयोग समाप्त कर देने के लिए ऐसे सभी राज्यों के विधान मण्डलों द्वारा, जिन्होंने हिन्दी को अपनी राजभाषा के रूप में नहीं अपनाया है, संकल्प पारित नहीं कर दिए जाते और जब तक पूर्वोक्त संकल्पों पर विचार कर लेने के पश्चात् ऐसी समाप्ति के लिए संसद के हर एक सदन द्वारा संकल्प पारित नहीं कर दिया जाता।

4. राजभाषा के सम्बन्ध में समिति -

- (1) जिस तारीख को धारा 3 प्रवृत्त होती है उससे दस वर्ष की समाप्ति के पश्चात्, राजभाषा के सम्बन्ध में एक समिति, इस विषय का संकल्प संसद के किसी भी सदन में राष्ट्रपति की पूर्व मंजूरी से प्रस्तावित और दोनों सदनों द्वारा पारित किए जाने पर, गठित की जाएगी।
- (2) इस समिति में तीस सदस्य होंगे जिनमें से बीस लोक सभा के सदस्य होंगे तथा दस राज्य सभा के सदस्य होंगे, जो क्रमशः लोक सभा के सदस्यों तथा राज्य सभा के सदस्यों द्वारा आनुपातिक प्रतिनिधित्व पद्धति के अनुसार एकल संक्रमणीय मत द्वारा निर्वाचित होंगे।
- (3) इस समिति का कर्तव्य होगा कि वह संघ के राजकीय प्रयोजनों के लिए हिन्दी के प्रयोग में की गई प्रगति का पुनर्विलोकन करें और उस पर सिफारिशें करते हुए राष्ट्रपति को प्रतिवेदन करें और राष्ट्रपति उस प्रतिवेदन को संसद के हर एक सदन के समक्ष रखवाएगा और सभी राज्य सरकारों को भिजवाएगा।
- (4) राष्ट्रपति उपधारा (3) में निर्दिष्ट प्रतिवेदन पर और उस पर राज्य सरकारों ने यदि कोई मत अभिव्यक्त किए हों तो उन पर विचार करने के पश्चात् उस समस्त प्रतिवेदन के या उसके किसी भाग के अनुसार निदेश निकाल सकेगा :
- परन्तु इस प्रकार निकाले गए निदेश धारा 3 के उपबन्धों से असंगत नहीं होंगे।

विषय वस्तु

प्रसंगवश—	
— सुधांशु कुमार विश्वास —	3
मोहब्बत में इजहार —	
— सरिता तिवारी	4
नदियों के घाट —	
— सुप्रिया राय	5
चुटकुले—	
— साक्षी कुमारी	6
भारत की शान -इसरो	
— विकास कुमार	7
मुर्गी उड़ी—	
— पूजा कुमारी	8
क्यू आर कोड	
— विनोद कुमार त्रिपाठी	09
हींग —	
— विनय कुमार झा	10
वर्ग पहेली	
— संतोष कुमार	11
गणितज्ञ रामानुजम	
— इंद्रज्योति राय	12
प्रायश्चित —	
— प्रियंका पाण्डेय	14
एजी ओजी	
— शैलेंद्र राम	18
बेटी धरती का वरदान	
— शुभी प्रज्ञा	18
हिंद की भाषा...	
— विजय कुमार	19
चित्र विथिका	19-20

प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। इससे संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

संपर्क सूत्र

संपादक, बढ़ते कदम
मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय
पूर्व रेलवे/मालदा
फोन- 72190/ 72192 (रेलवे)
Email – Rajbhasha.malda@gmail.com

होली की हुड़दंग

फागुन आया खिल गए, टेसू और कनेर
गदराया यौवन कहे, प्रियतम मत कर देर।

साधो ऋतु वसंत की, महिमा बड़ी अनंत
होली में हुलसे फिरे, जिन्हें कहें सब संता।

गली-गली में हो रहा, होली का हुड़दंग
सब पानी-पानी हुए, महंगे हो गए रंग।

किसी कवि की लिखी ये पंक्तियां होली की बहुत सारी विशेषताएं बताने में सक्षम हैं। इस साल होली 13 मार्च को मनाई जाएगी। पारंपरिक रूप से रंगों का यह त्यौहार उमंग, उल्लास और खानपान का यह उत्सव दो दिन तक मनाया जाता है। पहले दिन होलिका जलाई जाती है, जिसे होलिका-दहन कहते हैं। होली के दूसरे दिन को धुरड्डी, धुरखेल आदि कहा जाता है। इस दिन लोग एक-दूसरे पर रंग, अबीर-गुलाल फेंकेते हैं और घर-घर जाकर लोगों को रंग लगाते हैं। परंपरा से मनाये जाने वाले इस त्यौहार से जुड़े कुछ महत्वपूर्ण तथ्य और रोचक बातें—

भारतीय पंचांग और ज्योतिष के अनुसार फाल्गुन माह की पूर्णिमा को होली मनायी जाती है और उसके अगले दिन से चैत्र शुदी प्रतिपदा की शुरुआत होती है और इसी दिन से विक्रम संवत के नववर्ष का आरंभ माना जाता है। इसलिए होली पर्व नवसंवत और नववर्ष के आरंभ का प्रतीक है।

प्रचलित मान्यता के अनुसार यह त्यौहार हिरण्यकशिपु की बहन होलिका के मारे जाने की स्मृति में मनाया जाता है। होलिका को आग से न जलने के वरदान के बाद भी होलिका जल गयी, प्रह्लाद बच गये। तभी से होली मनाने की प्रथा चल पड़ी। प्राचीन काल में होली के दिन महिलाओं द्वारा परिवार की सुख समृद्धि के लिए पूर्णिमा के चांद की पूजा की जाती थी और इसे वसंतोत्सव के रूप में काफी हर्ष-उल्लास और नए अन्न के साथ मनाया जाता था।

होली केवल रंगों का ही त्यौहार नहीं है, बल्कि सामाजिक और धार्मिक त्यौहार भी है। इसे सभी बड़े उत्साह से मनाते हैं और इसमें जातिभेद-वर्णभेद का कोई स्थान नहीं होता है। होली की ढेर सारी शुभकामनाओं के साथ ॥

— सुधांशु कुमार विश्वास

निःशुल्क वितरण हेतु

संरक्षक	परामर्श	प्रधान संपादक	संपादक	कार्यकारी संपादक	सहयोग
मोहित सिन्हा मंडल रेल प्रबंधक	विजय कुमार साहू अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं अपर मंडल रेल प्रबंधक	सुधांशु कुमार विश्वास राजभाषा अधिकारी(प्रा.)	सच्चिदानंद व. अनुवादक	इंद्र ज्योति राय क. अनुवादक	दयामय दास कनिष्ठ इंजीनियर

मोहब्बत में इजहार

मोहब्बत में इजहार का बड़ा महत्व है। बिना इजहार किए कोई आशिक यह कह नहीं सकता कि उसने इश्क के दरिया में गोता लगाया है। मोहब्बत में कभी कभी दिल के जजबातों को जाहिर करना बड़ा मुश्किल हो जाता है। इंकार का डर सताता है कहीं इजहारे मोहब्बत पर इंकार का कहर ना टूट पड़े और सपनों की डोर हाथ से न छूट जाए। इजहार के पहले भले दिल में कितना ही हौसला क्यों ना हो पर जुबान लड़खड़ाने लगती है हाथ और पैर कांपने लगते हैं, जो कहना चाहते हैं वह गले में अटक कर रह जाता है। कहने के लिए मन बार मचलता है पर कहने का साहस नहीं होता है।

प्रेम साहस की मांग करता है, साहस मन की आवाज सुनने, आवेगों को समझने, और अपनी भावनाओं के बारे में बताने का माध्यम है। साहस के बिना जिंदगी अधूरी ही रहती है क्योंकि इसके बिना प्रेम का इजहार नहीं हो पाता है। प्रेम में हिम्मत के साथ कहना पड़ता है कि

तुम अगर साथ देने का वादा करो।

मैं यूँही मस्त नगमें लुटाता रहूँ

तुम मुझे देख कर मुस्कुराती रहो

मैं यूँ ही गीत गाता रहूँ

महेन्द्र कपूर के स्वर में गाया गया यह गीत मोहब्बते इजहार का एक सुंदर नमूना है। पर इजहारों का दौर यहीं पर खत्म नहीं होता है और हर आशिक अपने तौर पर अपनी मोहब्बत का इजहार करता है।



प्रेम में सपनों की ख्याली दुनिया से बाहर कभी ना खत्म होने वाली एक सुनहरी दास्तान हकीकत की ठोस जमीन पर बना सकते हैं। इजहार का मतलब है भरोसा दिलाना कि अगर साथ में तुम हो तो हम कुछ भी कर सकते हैं और अगर साथ में तुम नहीं हो तो कुछ भी नहीं कर सकते।

इजहार-ए-इश्क हमेशा शब्दों से नहीं होता है प्रेम जब अपने उफान पर होता है तो शब्द नाकाफी हो

जाते हैं। किसी शायर ने सच कहा है-- कौन कहता है मोहब्बत की जुबान होती है यह हकीकत तो निगाहों से बयां होती है। बात सच्ची है कि दिल की बात कहने के लिए शब्द हमेशा काम नहीं आते, अक्सर कमजोर पड़ जाते हैं।

मोहब्बत की कहानी में इजहार-ए-इश्क की बस शुरूआत ही होती है शब्दों से। पुराने जमाने में खत लिखे जाते थे अब आधुनिक जमाना है अब तकनीक के सहारे प्रेम परवान चढ़ता है। एस एम एस, वाट्स अप, गूगल टॉक, फेसबुक, इंस्टाग्राम और स्नैपचैट के सहारे हर लम्हा प्रेमी प्रेम में गुजारना चाहते हैं। प्रेम में नए फूल खिलाना चाहते हैं। ना जाने कितने ही शब्द गढ़ते हैं उन्हें लिखते हैं, सोच-सोचकर नए नए रूपों में उन्हें ढालते हैं और अपने मोहब्बत की गाड़ी को आगे बढ़ाते हैं। भावनाओं, संवेदनाओं, कर्तव्य निष्ठा, और समर्पण का अगर मेल हो जाए तो मोहब्बत अपने अंजाम तक पहुंच जाती है। मोहब्बत की बातें जब दिलों से निकलती है तो अल्फाज का साथ बहुत कम समय तक रहता है। देर तक साथ देती है तो बस मोहब्बत की नीयत। मोहब्बत में किया गया सलूक वफा और नेकदिली। अगर इरादे नेक हो तो जिंदगी खुद ब खुद खुशनुमा और खूबसूरत बनती जाएगी।

नदियों के घाट

नदियों तक उतरती सीढ़ियां या कच्चे ढलान आमतौर पर घाट के लिए उपयोग किए जाते हैं। संस्कृत के शब्द घट्ट से घाट शब्द बना है जिसका आशय है नदी का वह भाग, हिस्सा या किनारा जहां जनसामान्य स्नान करते हैं, जल भरते हैं, यातायात के लिए उनका उपयोग करते हैं, अन्य सामाजिक कार्य, तीज-त्यौहार, पर्व पर विशेष स्नान, दान, पूजन, पूजा-पाठ, तर्पण आदि कार्य संपन्न करते हैं।

नदियों के किनारे किनारे सभ्यताएं विकसित हुईं। विश्व में जितनी भी सभ्यताएं विकसित हुईं उन सभ्यताओं में एक बात समान थी वह थी नदियां। नदियों के बिना सभ्यताओं का विकास होना असंभव था। चाहे मेसोपोटामिया की

सभ्यता हो, या मोहनजोदड़ो की सभ्यता, या फिर सबसे आधुनिक आर्य सभ्यता। सभ्यताओं के विकास में नदियों के योगदान को नकारा नहीं जा सकता। नदियों के साथ-साथ घाटों की चर्चा भी सभ्यता की यात्रा यानी विकास यात्रा के साथ आवश्यक है। नदियों के किनारे के घाट ना सिर्फ विकास के मौन साक्षी रहे हैं बल्कि विकास में भी शामिल रहे। घाटों



के बगैर समाज और देश की धार्मिक सांस्कृतिक सामाजिक पारंपरिक विकास यात्रा का सही सही आकलन नहीं किया जा सकता है। घाटों पर जहां जन्म और विवाह के उत्सव और अन्य शुभ मांगलिक कार्यों को अंजाम दिया जाता है वहीं मृत्यु के पश्चात अंतिम संस्कार भी इन्हीं घाटों पर ही संपन्न किए जाते हैं। अर्थात् मनुष्य के जीवन में जन्म से लेकर मृत्यु तक घाटों ने अहम भूमिका निभाई है।

घाट की बात कहने से नदियों के किनारे शमशान घाट का भी जिक्र आवश्यक हो जाता है। अमूनन हर शहर हर गांव में यह घाट होता है। मिट्टी से बने शरीर को फिर से मिट्टी में मिलाने का स्थान यह घाट होता है। पंचभूत में मिलने का स्थान यह घाट होता है। हमारे लोक जीवन में शमशान घाट से जुड़ी कई पौराणिक कथाएं हैं। काशी के 2 घाटों का जिक्र होता है एक हरिश्चंद्र घाट और दूसरा मणिकर्णिका घाट। कथा के अनुसार अयोध्या के राजा सत्य के प्रतीक हरिश्चंद्र इसी सत्य की रक्षा के लिए काशी के इसी शमशान घाट पर बिके थे। इसीलिए इस घाट का नाम हरिश्चंद्र घाट पड़ा। हरिश्चंद्र अपने जीवन काल में अपनी सत्य निष्ठा के लिए प्रसिद्ध थे और उनके जैसे व्यक्तित्व ने इस घाट पर अपना कुछ काल बिताया जो प्रशंसनीय है। लोक जीवन में प्रचलित कथाओं के अनुसार माता पार्वती के कान की मणि इस घाट में गिरने के कारण इस घाट का नाम मणिकर्णिका पड़ा।

घाट को लेकर लोक भाषा में हमारे लोग जीवन में मुहावरे भी कम नहीं बने हैं। जैसे धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का। घाट घाट का पानी पीना। जाने किस घाट लगे अपनी नाव। शेर बकरी को एक घाट पर पानी पिलाना आदि। यह मुहावरे यह तो इशारा करते ही हैं कि घाट हमारे जीवन हमारे समाज में बेहद घुल मिल गया है। घाट के द्वारा ही मनुष्य की व्याख्या भी की जाती है जैसे न घर के रहे न घाट के। यह लोकोक्ति मनुष्य की उस दशा को बुरी तरह

बखान कर देती है जहां मनुष्य न तो अपने घर में टिक पाया और न बाहर के जगत में। घाट घाट का पानी पिया। इस मुहावरे में मनुष्य की पूरी शिथिलता उजागर हो जाती है कि वह मनुष्य कितना पहुंचा हुआ फकीर। जाने किस घाट लगे अनिश्चितता को बतलाती है। वही शेर और बकरी को एक ही घाट पर पानी पिलाना यह बतलाता है कि दो अलग विचारधारा के लोगों को एक साथ लाना कितनी दुष्कर है।

इतिहास में नदी पर घाट का उल्लेख प्राग मौर्यकाल में मिलता है। बौद्ध जातक में भी घाट का जिक्र है। घाट में नदी मार्ग से व्यापार व्यवसाय किया जाता था। बाद में घाट धार्मिक सांस्कृतिक आध्यात्मिक गतिविधियों का केंद्र भी बने। गुप्त तथा गुप्तोत्तर काल में घाटों के धार्मिक एवं सांस्कृतिक महत्व तथा उनकी गतिविधियों में और अधिक विस्तार विकास और संचार हुआ।

पुराणों को अगर आधार मानें तो महाभारत, मत्स्य पुराण, वायुपुराण, अग्नि पुराण, स्कंद पुराण, काशी खंड, जैन ग्रंथ, तीर्थ कल्प, और मानस में घाटों का प्रचुर संदर्भ मिलता है। ह्वेनसांग और अलबरूनी के यात्रा वृत्तांत में भी घाटों का जमकर जिक्र हुआ है। आचार्य रामानुज ने अस्सी घाट पर रहकर ही अपने मत का प्रचार किया था। रामानंद, कबीर, तुलसीदास, रविदास जैसे महापुरुषों ने समाज में व्याप्त पाखंड रूढ़ियों बाह्य आडंबरों और सामाजिक बुराइयों को समाप्त करने और सामाजिक धार्मिक सांस्कृतिक समन्वय स्थापित करने में महत्वपूर्ण कार्य किया था। घाट इतिहास के साक्षी रहे हैं और इन घाटों ने बहुत सी सभ्यताओं को उजड़ते और बसते भी देखा है। खासकर भारतीय संस्कृति के विकास का आधार ही घाट रहे हैं और आज भी ये घाट जीवन में उतने ही महत्व रखते हैं जितने पूर्व काल में रखते थे

—सुप्रिया राय



संजय - हाल ही में पैदा हुआ तुम्हारा भाई इतना रोता क्यों है ?

अजय - बात यह है कि अगर तुम्हारे एक भी दांत न हो सिर गंजा हो, पैर इतने कमजोर हों कि तुम खड़े भी न हो सको। ऐसी हालत में मेरा ख्याल है कि तुम्हें भी रोना आएगा।

पत्नी - मैं तुमसे जो भी कहती हूं तुम एक कान से सुनकर दूसरे कान से निकाल देते हो।

पति - किन्तु मैं जो कहता हूं तुम उसे दोनों कानों से सुनकर मुंह से निकाल देती हो।

पचास वर्षीय पति - आज सबेरे शेव करने के पश्चात मैं महसूस कर रहा था कि मेरी उम्र के दस साल कम हो गए।

पत्नी - क्या कहते हो ! यदि इस स्पीड से रोज उम्र कम होती चली गई तो एक हफ्ते में तुम गायब ही हो जाओगे।

— साक्षी कुमारी

भारत की शान : इसरो

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (*Indian Space Research Organisation*) संक्षेप में इसे 'इसरो' कहते हैं। भारत का राष्ट्रीय अंतरिक्ष संस्थान है जिसका मुख्यालय बंगलुरु में है। इसकी स्थापना 1969 में की गई। 'इसरो' को अंतरिक्ष विभाग के नियंत्रण में रखा गया। भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम के इतिहास में 70 का दशक प्रयोगात्मक युग था जिस दौरान 'आर्यभट्ट', 'भास्कर', 'रोहिणी' तथा 'एप्पल' जैसे प्रयोगात्मक उपग्रह कार्यक्रम चलाए गए। संस्थान में लगभग 17,000 कर्मचारी एवं वैज्ञानिक कार्यरत हैं। संस्थान का मुख्य कार्य भारत के लिये अंतरिक्ष संबंधी तकनीक उपलब्ध करवाना है। अंतरिक्ष कार्यक्रम के मुख्य उद्देश्यों में उपग्रहों, प्रमोचक यानों, परिज्ञापी राकेटों और भू-प्रणालियों का विकास शामिल है।

पिछले दिनों इसरो ने एक साथ 104 उपग्रहों का अंतरिक्ष में प्रक्षेपण कर विश्व इतिहास रच दिया। दुनिया के किसी भी एक अंतरिक्ष अभियान में इससे पूर्व इतने उपग्रह एक साथ कभी नहीं छोड़े गये हैं, यद्यपि इसरो ने अपना स्वयं का रिकॉर्ड एक साथ 20 उपग्रह प्रक्षेपित किए जाने का तोड़ा है।

इसरो का उद्देश्य है, विभिन्न राष्ट्रीय कार्यों के लिए अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी और उसके उपयोगों का विकास। इसरो ने दो प्रमुख अंतरिक्ष प्रणालियाँ स्थापित की हैं-संचार, दूरदर्शन प्रसारण और मौसम विज्ञानीय सेवाओं के लिए इन्सैट और संसाधन मॉनीटरन तथा प्रबंधन के लिए भारतीय सुदूर संवेदन उपग्रह (आईआरएस)। इसरो ने इन्सैट और आईआरएस उपग्रहों को अपेक्षित कक्षा में स्थापित करने के लिए पीएसएलवी और जीएसएलवी, दो उपग्रह प्रमोचन यान विकसित किए हैं।

इसरो की प्रमुख उपलब्धियों में वर्ष 2005-06 में भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम की सबसे प्रमुख उपलब्धि 'पीएसएलवीसी 6' का सफल प्रक्षेपण रहा है। लगातार सातवीं प्रक्षेपण सफलता के बाद पीएसएलवी-सी 6 की सफलता ने पीएसएलवी की विश्वसनीयता को आगे बढ़ाया तथा 600 कि.मी. ऊंचे पोलर एसएसओ में 1600 कि.ग्रा. भार तक के नीतभार को रखने की क्षमता को दर्शाया है। 22 दिसंबर, 2005 को इन्सैट-4ए का सफल प्रक्षेपण जो भारत द्वारा अब तक बनाए गए सभी उपग्रहों में सबसे भारी तथा शक्तिशाली है, वर्ष 2005-06 की अन्य बड़ी उपलब्धि थी। इन्सैट-4ए डीटीएच टेलीविजन प्रसारण सेवाएं प्रदान करने में सक्षम है। इसके अतिरिक्त, नौ ग्रामीण संसाधन केंद्रों के दूसरे समूह की स्थापना करना अंतरिक्ष विभाग की वर्ष के दौरान महत्वपूर्ण मौजूदा पहल है। वीआरसी की धारणा ग्रामीण समुदायों की बदलती तथा महत्वपूर्ण आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अंतरिक्ष व्यवस्थाओं तथा अन्य आईटी औजारों से निकलने वाली विभिन्न प्रकार की जानकारी प्रदान करने के लिए संचार साधनों तथा भूमि अवलोकन उपग्रहों की क्षमताओं को संघटित करती है।

मनुष्य का जिज्ञासु स्वभाव उसकी प्रकृति का हिस्सा रहा है। मानव की खगोलीय खोजें उपनिषदों से शुरू होकर उपग्रहों तक पहुंची है। हमारे पूर्वजों ने शून्य और उड़न तश्तरियों जैसे विचारों की परिकल्पना की थी। शून्य का विचार वैज्ञानिक अनुसंधानों का केंद्र बिंदु है। 12 वीं सदी के महान खगोल विज्ञानी आर्यभट्ट और उनकी गणितज्ञ बेटी लीलावती के अलावा वराहमिहिर, भास्कराचार्य जैसे विद्वानों ने ब्रह्मांड के रहस्यों को खंगालने में अपना सारा जीवन व्यतीत कर दिया। भारत के प्रथम स्वदेशी अंतरिक्ष उपग्रह का नामाकरण आर्यभट्ट के नाम से किया गया है। इससे भारत न केवल अंतरिक्ष की अनंत ऊंचाइयों तक पहुंचा है बल्कि धन कमाने का भी मजबूत आधार पाया है। - विकास कुमार

मुर्गी उड़ी

एक साहूकार था। गांव में उसका दबदबा था। गांव के किसान उससे कर्ज लिया करते थे। साहूकार को खाने का बड़ा शौक था। वह अकसर सूद के रूप्यों के साथ साथ कर्जदारों से अच्छे खाने की मांग भी करता था। एक बार उसके लिए उसके कुछ किसान एक भुनी हुई मुर्गी और एक बोतल फल का रस ले आए। साहूकार ने अपने नौकर को बुलाया और मुर्गी को घर ले जाने को कहा। साहूकार का नौकर चालाक था यह साहूकार जानता था इसलिए उसने नौकर से कहा, "देखो, उस कपड़े में जिंदा चिड़िया है और बोतल में जहर है, खबरदार, जो रास्ते में उस कपड़े को हटाया, क्योंकि अगर तुमने ऐसा किया तो चिड़िया उड़ जाएगी और बोतल सूंघ भी ली तो तुम मर जाओगे। समझे?"

नौकर भी अपने मालिक को खूब पहचानता था। उसने एक घने पेड़ की छांव में बैठकर भुनी मुर्गी खाई। उसने बोतल में जो रस था वह भी सारा पी डाला। एक बूंद भी नहीं छोड़ा।

उधर साहूकार भोजन के समय घर पहुँचा और पत्नी से भोजन परोसने को कहा। उसकी पत्नी ने कहा, "जरा देर ठहरो खाना अभी तैयार नहीं है।"

साहूकार ने कहा, "मैंने जो मुर्गी और रस की बोतल नौकर के हाथ भिजवायी थी वही दे दो वही काफी है। मैं उसे ही खा लूंगा, तुम आराम से खाना बनाओ। पत्नी ने कहा-नौकर तो आपके साथ ही गया था। अभी तक तो वह लौटा ही नहीं है। यह सुनकर उसके गुस्से की सीमा न रही।

बिना कुछ बोले गुस्से से भरा साहूकार वापस अपने काम की जगह वापस लौट रहा था तो देखा नौकर उसी पेड़ की छांव में गमछा तान कर सो रहा है। उसने उसे लात मारकर जगाया और किसान द्वारा लाई गई भेंट के बारे में पूछा।

नौकर ने कहा, "मालिक, मैं घर जा रहा था तो इतने जोर की हवा चली कि मुर्गे के ऊपर ढका कपड़ा उड़ गया और जैसा आपने कहा था, वह भी उड़ गया। मुझको बहुत डर लगा कि आप सज़ा देंगे और मैंने बचने के लिए बोतल में जो जहर था वह पी लिया। और अब यहाँ लेटा-लेटा मौत के आने का इंतजार कर रहा था। यह सुनकर साहूकार ने अपना माथा पकड़ लिया।

प्रश्न पत्र

एक रात, चार कॉलेज विद्यार्थी देर तक मस्ती करते रहे और जब होश आया तो अगली सुबह होने वाली परीक्षा का भूत उनके सामने आकर खड़ा हो गया। परीक्षा से बचने के लिए उन्होंने एक योजना बनाई। मैकेनिकों जैसे गंदे और फटे पुराने कपड़े पहनकर वे प्रिंसिपल के सामने जा खड़े हुए और उन्हें अपनी दुर्दशा की जानकारी दी। उन्होंने प्रिंसिपल को बताया कि कल रात वे चारों एक दोस्त की शादी में गए हुए थे। लौटते में गाड़ी का टायर पंकचर हो गया। किसी तरह धक्का लगा-लगाकर गाड़ी को यहां तक लाए हैं। इतनी थकान है कि बैठना भी संभव नहीं दिखता, पेपर हल करना तो दूर की बात है। यदि प्रिंसिपल साहब उन चारों की परीक्षा आज के बजाय किसी और दिन ले लें तो बड़ी मेहरबानी होगी। प्रिंसिपल साहब बड़ी आसानी से मान गए। उन्होंने तीन दिन बाद का समय दिया। विद्यार्थियों ने प्रिंसिपल साहब को धन्यवाद दिया और जाकर परीक्षा की तैयारी में लग गए। तीन दिन बाद जब वे परीक्षा देने पहुंचे तो प्रिंसिपल ने बताया कि चारों को अलग-अलग कमरों में बैठना होगा। चारों विद्यार्थी अपने-अपने नियत कमरों में जाकर बैठ गए जो प्रश्नपत्र उन्हें दिया गया उसमें केवल एक ही प्रश्न था —

गाड़ी का कौन सा टायर पंकचर हुआ था ? (100 अंक)

अ. अगला बायां ब. अगला दायां स. पिछला बायां द. पिछला दाया

— पूजा कुमारी

क्यू आर कोड

क्यू आर कोड क्विक रिस्पांस का संक्षिप्त रूप है अर्थात क्यू आर कोड का फुल फार्म है। क्विक रिस्पांस का उपयोग किसी भी जानकारी को स्मार्टफोन पर भेजने के लिए किया जाता है। सर्वप्रथम जापान में मोटर वाहन उद्योग के लिए इसे बनाया गया था। ये कोड बहुत सी जानकारी को एकत्रित कर सकते हैं जैसे फ़ोन नंबर, टेक्स्ट, सन्देश, ईमेल सन्देश इत्यादि।

यह एक प्रकार के मैट्रिक्स बारकोड के लिए ट्रेडमार्क है। भले ही क्यू आर संकेतावली सर्वप्रथम मोटर वाहन उद्योग के लिए विकसित किया गया था। लेकिन इसकी पठनीयता और बड़ी भंडारण क्षमता के चलते हाल ही में यह तंत्र ज्ञान मोटर वाहन उद्योगों से परे भी लोकप्रिय हो गया। क्यू आर कोड मैट्रिक्स बारकोड का एक प्रकार का ट्रेडमार्क है। मूलतः यह एक बारकोड ही है जो एक मशीन पठनीय ऑप्टिकल लेबल है जो खुद से जुड़े हुए आइटम के बारे में जानकारी रखते हैं।



क्यूआर कोड का आसानी से उपयोग करने के लिए आपके पास कैमरा और क्यूआर कोड रीडर, स्कैनर की सुविधा से लैस एक स्मार्टफोन होना चाहिए। वैसे तो आजकल के नए स्मार्टफोन्स में यह एप्प पहले से उपलब्ध होता है। अगर आपके स्मार्टफोन में यह एप्प नहीं है, तो आप गूगल प्लेस्टोर से एक क्यूआर कोड रीडर, स्कैनर एप्लिकेशन इन्स्टाल कर सकते हैं जबतक यह सुविधा आपके फोन में उपलब्ध नहीं होगी तबतक आप क्यू आर रीडर का उपयोग नहीं कर सकते हैं। क्यू आर कोड के द्वारा आवश्यक कोई भी जानकारी आसानी से प्राप्त करके इस का इस्तेमाल विभिन्न क्षेत्रों में किया जा सकता है अर्थात इस क्यू आर कोड से होने वाले लाभ को प्राप्त कर सकते हैं।

एक क्यू आर कोड चार मानकीकृत एन्कोडिंग मोड का कुशलता से डेटा स्टोर करने के लिए उपयोग करता है; एक्सटेंशनों का भी इस्तेमाल किया जा सकता है। क्यूआर कोड प्रणाली मानक बारकोड की तुलना में अपनी तेजी से पठनीयता और अधिक से अधिक भंडारण क्षमता के कारण मोटर वाहन उद्योग के बाहर लोकप्रिय हो गयी। इन अनुप्रयोगों में शामिल हैं, उत्पाद पर नज़र रखने, वस्तु की पहचान, समय ट्रैकिंग, दस्तावेज़ प्रबंधन, और सामान्य विपणन। क्यू आर कोड बहुत से काले बिंदु और लाइनों का एक चोकोर चित्र होता है जिनमें बहुत सी जानकारी छिपी हुई होती है। इस जानकारी को प्राप्त करने के लिए आपके फ़ोन में क्यू आर कोड रीडर होना चाहिए यह क्विक रिस्पांस करता है। क्यू आर कोड के दो प्रकार होते हैं —

गतिशील क्यू आर कोड— इस तरह के कोड को जीवंत क्यू आर कोड भी कहा जाता है। इस कोड को एक बार बना लेने के बाद इससे छेड़छाड़ किये बिना ही इसके मुख्य गंतव्य लिंक को सम्पादित कर सकते हैं। गतिशील क्यू आर कोड सुविधा जनक होते हैं जिन्हें एक बार बनाकर ही लागू किया जा सकता है।

स्थिर क्यू आर कोड— स्थिर कोड या तो टेक्स्ट के रूप में सीधे जानकारी इक्कठा करते हैं या फिर किसी माध्यमिक लिंक के द्वारा सूचना एकत्रित करते हैं।

अपने उत्पाद और व्यवसाय के बारे में अपने ग्राहकों को वेब पेज से जुड़ने के लिए अपने उत्पाद की लास्ट पैकेजिंग में क्यू आर जोड़ सकते हैं। व्यवसायिक कार्ड और विज्ञापन सामग्री के लिए इस्तेमाल कर सकते हैं। इससे ये आपके संपर्क विवरण को स्मार्टफोन के एड्रेस बुक पर दिखा सके।

हींग

हींग सौंफ़ की प्रजाति का एक ईरानी मूल का पौधा है। ये पौधे भूमध्यसागर क्षेत्र से लेकर मध्य एशिया तक में पैदा होते हैं। भारत में यह कश्मीर और पंजाब के कुछ हिस्सों में पैदा होता है। हींग एक बारहमासी शाक है। इस पौधे के विभिन्न वर्गों के भूमिगत प्रकन्दों व ऊपरी जड़ों से रिसनेवाले शुष्क वानस्पतिक दूध को हींग के रूप में प्रयोग किया जाता है। कच्ची हींग का स्वाद लहसुन जैसा होता है, लेकिन जब इसे व्यंजन में पकाया जाता है तो यह उसके स्वाद को बढ़ा देता है। इसे संस्कृत में 'हिङ्गु' और अंग्रेजी में ऐसोफोटाडिया कहा जाता है।

हींग दो प्रकार की होती हैं- एक हींग काबूली सुफाइद (दुधिया सफेद हींग) और दूसरी हींग लाल। हींग का स्वाद तीखा व कटु है और उसमें सल्फर की मौजूदगी के कारण एक अरुचिकर तीक्ष्ण गन्ध निकलता है। यह तीन रूपों में उपलब्ध हैं- 'टियर्स', 'मास' और 'पेस्ट'। 'टियर्स', वृत्ताकार व पतले, राल का शुद्ध रूप होता है इसका व्यास पाँच से 30 मि.मी. और रंग भूरे और फीका पीला होता है। 'मास' - हींग साधारण वाणिज्यिक रूप है जो ठोस आकारवाला है। 'पेस्ट' में अधिक तत्व मौजूद रहते हैं। सफेद व पीला हींग जल में घुलनशील है जबकि गहरे व काले रंग की हींग तैल में घुलनशील है। अपने तीक्ष्ण सुगन्ध के कारण शुद्ध हींग को पसंद नहीं किया जाता बल्कि इसे स्टार्च ओर गम मिलाकर संयोजित हींग के रूप में, ईंट की आकृति में बेचा जाता है। हींग के सेवन से अनेक फायदे हैं-



- ⇒ हींग को गुड़ के साथ खाने पर हिचकी आनी बंद हो जाती है।
- ⇒ हींग का सेवन रक्त जमने या थक्के बनने की स्थिति में लाभ देता है।
- ⇒ लो बीपी होने पर आप हींग का सेवन कीजिए। आपके लिए फायदेमंद रहेगा।
- ⇒ दांत के दर्द होने की स्थिति में आप हींग को थोड़े से पानी में उबालकर कुल्ला कर लीजिए आपको फायदा होगा।
- ⇒ इसके अलावा हींग के साथ गर्म पानी के गलाले से गले के सारे संक्रमण दूर हो जाते हैं।
- ⇒ हींग, आम की गुठली के भीतर की गिरी और कपूर बराबर मात्रा में लेकर कूटें और उसे पोदीने के रस में खूब अच्छी तरह से खरल में घोलकर छोटी-छोटी गोलियां बना। हैजा होने पर इन गोलियों के सेवन से लाभ होता है।
- ⇒ यदि आपको पेशाब आने में दिक्कत हो रही है तो हींग को सौंफ के अर्क के साथ सेवन करने से यह समस्या दूर हो सकती है।
- ⇒ हींग को तेल में पकाकर उस तेल को छानकर रख लें और रोज एक बूंद सुबह-शाम कान में डालें। कान में होने वाले दर्द से निजात मिलेगा।
- ⇒ नीम की कोमल पत्तियां और हींग को पीसकर फोड़े-फुंसी या चोट वाली जगह पर लगाने से राहत मिलता है और चोट ठीक भी हो जाती है।
- ⇒ यदि आप दाद की समस्या से ग्रसित हैं तो हींग को सिरके के साथ पीसकर दाद वाली जगह पर लगाएं आपको आराम मिलेगा।
- ⇒ पुरुषों में ताकत बढ़ाने के लिए हींग एक कारगर दवा है। हींग का इस्तेमाल कामेच्छा को भी बढ़ाती है।

वर्ग पहेली

वर्ग पहेली या क्रॉसवर्ड पजल अक्सर हम सभी लोगों ने विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में देखा है। काले और सफेद वर्गाकार खानों से सजी यह पहेली लोगों की बौद्धिक क्षमता को परखने का सबसे जाना पहचाना माध्यम है। इन वर्ग पहेलियों को सुलझाने में काफी मजा आता है। यद्यपि है तो यह माथापच्ची का कार्य लेकिन आज यह पाठकों की पसंद बन गया है। पाठकों का एक बहुत बड़ा वर्ग इन वर्ग पहेली को हल करने का शौकीन है।

ऐसा ही एक वाक्या और पेश आया था जब एक आदमी ने हंगरी की राजधानी बुडापेस्ट में सुसाइड कर लिया और उसमें पीछे छोड़ गए पत्र को वर्ग पहेली के रूप में लिखा। उस वर्ग पहेली को कोई हल नहीं कर सकता। एक समय एक दौर ऐसा भी आया था कि लोग वर्ग पहेली का विरोध करते थे लेकिन वर्ग पहेली को चाहने वाले लोग भी कम नहीं थे।

वर्ग पहेली की शुरुआत आर्थर वाइन ने सबसे पहले की थी। उन्होंने कुल 72 खाने बनाकर उन्हें आगे और खड़े रूप में इस तरह से व्यवस्थित करना शुरू किया कि उन खानों में रखे अक्षरों को मिलाकर एक शब्द तैयार हो और उस शब्द का कोई खास मतलब निकले। आर्थर ने इन सारे खानों में लिखे अक्षर

हटा दिए और जो शब्द जिस खाने से शुरू हुआ खत्म हो रहा था वहां उन्होंने कुछ अंक रख दिए। इसके बाद आर्थर ने अपने उस पहेली के बाहर की तरफ उन शब्दों से जुड़ी जानकारीयां लिख दी। यह जानकारीयां संकेतों के रूप में थी जिनकी मदद से पाठकों को ऐसा शब्द सोचना था जो दो अंकों के बीच में स्थित खानों में ठीक तरह से लिखा जा सके।

आर्थर ने अपने इस पहेली को वर्ड क्रॉस पजल नाम दिया जिसे अब सारी दुनिया क्रॉसवर्ड पजल के नाम से जानती है। आर्थर वाइन की यह वर्ग पहेली 21 दिसंबर 1913 को न्यूयॉर्क वर्ल्ड के रविवार को निकलने वाले अतिरिक्त परिशिष्ट फन में प्रकाशित हुई थी। देखते ही देखते यह वर्ग पहेली पाठकों के बीच काफी लोकप्रिय हो गई।

ग	आ		प		म्		ब्		ले	क
ण्		पे	ला		ध्		ले	इ		ह
उ			मू	न्	यां	क	क			शी
चा	ऐ	ने			त			हे	ना	न
प	ति			क	र	न्			ट	का
	ह	ने	म्	कू		यो	उ	गू	य	
उ	पि			ना	ना	जी			का	ई
क	क	जी			इ			क	र	ज
ता			हा	म्	टि	गू	स			ल
ह		ले	कि		गे		ब	क		पु
ट	क		म		ल		वे		पे	र

कोलंबिया विश्वविद्यालय से पढ़ें लिंकन सिस्टर और रिचर्ड साइमन ने वर्ग पहेलियों की एक किताब सबसे पहले प्रकाशित की थी। यह किताब अमेरिका में एक समय सबसे ज्यादा बिकने वाली किताब साबित हुई थी। वर्ग पहेलियों की लोकप्रियता का आलम यह था कि 1924 में शिकागो की एक महिला ने अपने पति के खिलाफ तलाक की अर्जी दायर कर दी क्योंकि उसका पति वर्ग पहेलियां हल करने में ज्यादा मशगूल रहता था और वह अपने काम और अपनी पत्नी को समय नहीं दे पाता था। मामले की सुनवाई करने के बाद जज ने अपना फैसला सुनाया कि आगे से वह व्यक्ति एक दिन में सिर्फ तीन ही वर्ग पहेलियां हल कर सकता है जिससे वह अपने घरेलू कामों में भी ठीक से ध्यान दे सके।

लोग अखबारों से वर्ग पहेली का पन्ना निकाल कर उन्हें हल करते और मूल अखबार को रद्दी की टोकरी में फेंक दिया करते थे। इस प्रकार देखते देखते वर्ग पहेली ने पूरे विश्व के पाठकों के मन मस्तिष्क पर अपना अधिकार कर लिया। आज भी पाठक अखबारों पत्रिकाओं में वर्ग पहेली को हल करने में काफी रुचि रखते हैं।

गणितज्ञ रामानुजनम्

श्रीनिवास रामानुजन अय्यंगर एक महान भारतीय गणितज्ञ थे। इन्हें आधुनिक काल के महानतम गणित विचारकों में गिना जाता है। इनका जन्म 22 दिसम्बर 1887 को भारत के दक्षिणी भूभाग में स्थित कोयंबटूर के ईरोड नामक गांव में एक पारंपरिक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। इनकी माता का नाम कोमलताम्मल और इनके पिता का नाम श्रीनिवास अय्यंगर था।

इनका बचपन मुख्यतः कुंभकोणम में बीता। बचपन में रामानुजम् का बौद्धिक विकास सामान्य बालकों जैसा नहीं था। तीन वर्ष की आयु तक जब रामानुजम् ने बोलना आरंभ नहीं किया तो सबको चिंता हुई कि कहीं यह गूंगे तो नहीं हैं। बाद के वर्षों में जब उन्होंने विद्यालय में प्रवेश लिया तो भी पारंपरिक शिक्षा में इनका कभी भी मन नहीं लगा। रामानुजम् ने दस वर्षों की आयु में प्राइमरी परीक्षा में पूरे जिले में सबसे अधिक अंक प्राप्त किया और आगे की शिक्षा के लिए टाउन हाईस्कूल पहुंचे।



रामानुजम् को प्रश्न पूछना बहुत पसंद था। इन्हें गणित में कोई विशेष प्रशिक्षण नहीं मिला, फिर भी इन्होंने विश्लेषण एवं संख्या सिद्धांत के क्षेत्रों में गहन योगदान दिया। इन्होंने अपने प्रतिभा और लगन से न केवल गणित के क्षेत्र में अद्भुत आविष्कार किए वरन भारत को अतुलनीय गौरव भी प्रदान किया। ये बचपन से ही विलक्षण प्रतिभावान थे। इन्होंने खुद से गणित सीखा और अपने जीवनभर में गणित के 3,884 प्रमेयों का संकलन किया। इन्होंने गणित के सहज ज्ञान और बीजगणित प्रकलन की अद्वितीय प्रतिभा के बल पर बहुत से मौलिक और अपारम्परिक परिणाम निकाले जिनसे प्रेरित शोध आज तक हो रहा है।

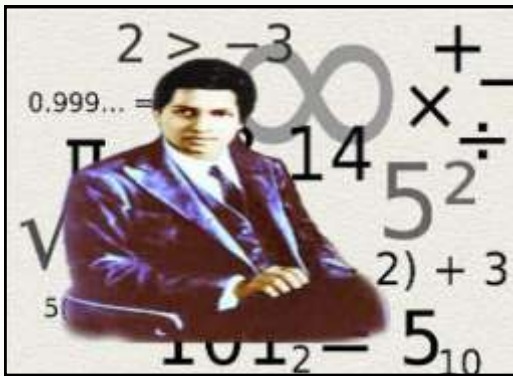
बचपन में जब यह पढ़ रहे थे यह उस समय की घटना है। एक दिन गणित के अध्यापक कक्षा में भाग की क्रिया समझा रहे थे। उनका प्रश्न था कि अगर तीन केले तीन विद्यार्थियों में बांटे जाये तो हरेक विद्यार्थी के हिस्से में कितने केले आयेंगे? विद्यार्थियों ने तत्काल उत्तर दिया कि हरेक विद्यार्थी को एक-एक केला मिलेगा। इस प्रकार अध्यापक ने समझाया कि अगर किसी संख्या को उसी संख्या से भाग दिया जाये तो उसका उत्तर एक होगा। लेकिन तभी कोने में बैठे रामानुजम् ने प्रश्न किया कि, यदि कोई भी केला किसी को न बाँटा जाए, तो क्या तब भी प्रत्येक विद्यार्थी को एक केला मिल सकेगा? सभी विद्यार्थी इस प्रश्न को सुनकर हँस पड़े, क्योंकि उनकी दृष्टि में यह प्रश्न मूर्खतापूर्ण था। प्रश्न था कि अगर शून्य को शून्य से विभाजित किया जाए तो परिणाम क्या होगा? प्रसिद्ध भारतीय गणितज्ञ भास्कराचार्य ने कहा था कि अगर किसी संख्या को शून्य से विभाजित किया जाये तो परिणाम अनन्त होगा। रामानुजम् ने इसका विस्तार करते हुए कहा कि शून्य का शून्य से विभाजन करने पर परिणाम कुछ भी हो सकता है अर्थात् वह परिभाषित नहीं है।

रामानुजम् का व्यवहार बड़ा ही मधुर था। विद्यालय में इनकी प्रतिभा ने दूसरे विद्यार्थियों और शिक्षकों पर छाप छोड़ना आरंभ कर दिया। इन्होंने स्कूल के समय में ही कालेज के स्तर के गणित को पढ़ लिया था। रामानुजम् का गणित के प्रति प्रेम इतना बढ़ गया था कि वे दूसरे विषयों पर ध्यान ही नहीं देते थे। यहां तक की वे इतिहास, जीव विज्ञान की कक्षाओं में भी गणित के प्रश्नों को हल किया करते थे। नतीजा यह हुआ कि ग्यारहवीं कक्षा की परीक्षा में वे गणित को छोड़ कर बाकी सभी विषयों में फेल हो गए और परिणामस्वरूप उनको छात्रवृत्ति मिलनी बंद हो गई। एक तो घर की आर्थिक स्थिति खराब और ऊपर से छात्रवृत्ति भी नहीं मिल रही थी। रामानुजम् के लिए यह बड़ा ही कठिन समय था। घर की स्थिति सुधारने के लिए इन्होंने गणित के कुछ ट्यूशन तथा खाते-बही का काम भी किया। कुछ समय बाद में

रामानुजम् ने फिर से बारहवीं कक्षा की प्राइवेट परीक्षा दी और अनुत्तीर्ण हो गए और इसी के साथ इनके पारंपरिक शिक्षा की इतिश्री हो गई।

इसके बाद इनके माता पिता ने इनका विवाह जानकी नामक कन्या से कर दिया। विवाह हो जाने के बाद अब इनके लिए सब कुछ भूल कर गणित में डूबना संभव नहीं था। अतः वे नौकरी की तलाश में मद्रास आए। पर उनका स्वास्थ्य भी बुरी तरह गिर गया। अब डॉक्टर की सलाह पर इन्हें वापस अपने घर कुंभकोणम लौटना पड़ा। बीमारी से ठीक होने के बाद वे वापस मद्रास आए और फिर से नौकरी की तलाश शुरू कर दी। इसी समय किसी के कहने पर रामानुजम् वहां के डिप्टी कलेक्टर श्री वी. रामास्वामी अय्यर से मिले। अय्यर गणित के बहुत बड़े विद्वान थे। यहां पर श्री अय्यर ने रामानुजम् की प्रतिभा को पहचाना और जिलाधिकारी श्री रामचंद्र राव से कह कर इनके लिए 25 रुपये मासिक छात्रवृत्ति का प्रबंध भी कर दिया। इस वृत्ति पर रामानुजम् ने मद्रास में एक साल रहते हुए अपना प्रथम शोधपत्र प्रकाशित किया जो जर्नल ऑफ इंडियन मैथेमेटिकल सोसाइटी में प्रकाशित हुआ था। यहां पर रामानुजम् रात भर जाग कर नए-नए गणित के सूत्र लिखा करते थे।

अब तक रामानुजम् को मद्रास विश्वविद्यालय में शोध वृत्ति मिल गई थी जिससे उनका जीवन कुछ सरल हो गया और उनको शोधकार्य के लिए पूरा समय भी मिलने लगा था। इसी बीच एक लंबे पत्र व्यवहार के बाद धीरे-धीरे प्रोफेसर



हार्डी ने रामानुजम् को कैंब्रिज आने के लिए सहमत कर लिया। प्रोफेसर हार्डी के प्रयासों से रामानुजम् को कैंब्रिज जाने के लिए आर्थिक सहायता भी मिल गई। रामानुजम् ने इंग्लैण्ड जाने के पहले गणित के करीब 3000 से भी अधिक नये सूत्रों को अपनी नोटबुक में लिखा था। रामानुजम् ने लंदन की धरती पर कदम रखा और प्रोफेसर हार्डी के साथ मिल कर उच्चकोटि के शोधपत्र प्रकाशित किए। अपने एक विशेष शोध के कारण इन्हें कैंब्रिज विश्वविद्यालय द्वारा बी.ए. की उपाधि भी मिली। इसके बाद वहां रामानुजम् को रॉयल सोसाइटी का फेलो नामित

किया गया। रॉयल सोसाइटी की सदस्यता के बाद यह ट्रिनीटी कॉलेज की फेलोशिप पाने वाले पहले भारतीय भी बने। धीरे धीरे रामानुजम् का स्वास्थ्य गिरता जा रहा था और अंत में डॉक्टरों की सलाह पर उन्हें वापस भारत लौटना पड़ा। भारत आने पर इन्हें मद्रास विश्वविद्यालय में प्राध्यापक की नौकरी मिल गई और रामानुजम् अध्यापन और शोध कार्य में पुनः रम गए।

भारत लौटने पर भी स्वास्थ्य ने इनका साथ नहीं दिया और हालत गंभीर होती जा रही थी। इस बीमारी की दशा में भी इन्होंने मॉक थीटा फंक्शन पर एक उच्च स्तरीय शोधपत्र लिखा। इस समय रामानुजन् की आयु मात्र 33 वर्ष थी और असमय एक दिन इस दुनिया को छोड़कर विदा हो गए। भारत सरकार ने इनके जन्म दिन को राष्ट्रीय गणित दिवस के रूप में मनाने की घोषणा की तथा इनके सम्मान में वर्ष 2011 ई. में इनपर डाक टिकट भी जारी किया गया।

- इन्द्रज्योति राय

" खुद पर काबू पा लेना ही मनुष्य की सबसे महत्वपूर्ण जीत होती है।"

~प्लेटो

महान सपने देखने वालों के महान सपने हमेशा पूरे होते हैं।

~ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

प्रायश्चित

रीता अपने कमरे में चुपचाप बैठी अपने पति की प्रतीक्षा कर रही थी। दीवाल पर लगी घड़ी ने रात के नौ बजने के संगीतमय स्वर से पूरे कमरे को गुंजायमान कर दिया। घड़ी की आवाज सुन कर रीता को होश आया कि अभी तक उसका पति घर नहीं आया है। इसके पहले वह सात बजे के पहले ही आ जाया करता था। हालांकि उसके घर आ जाने पर वह कभी सीधे मुंह बात तक नहीं करती थी।

रीता ने बी. ए. किया था। पर शिक्षा से उसका दूर-दूर तक नाता नहीं था। पढ़ना क्या था, नकल के जमाने में किताबें खोल कर कर परीक्षा पास कर ली थी। यह संयोग ही था कि गोरे रंग और छरहरे बदन पर बड़ी-बड़ी आंखों से वह शीघ्र ही किसी का मन मोह लिया करती थी। यही कारण था कि उसका यह अहम उसे अपने पति के करीब जाने से रोक दिया करता था। फिर भी वह अपने स्वभाव में किसी तरह का परिवर्तन नहीं करना चाहती थी।

शादी की मुंह दिखाई के समय ही यदि उसे अपने परिवार की मर्यादा का ख्याल नहीं होता तो राकेश को अनफिट करार दे देती। उसकी इसी हल्लाउठा ने उसे शादी के बाद भी सिर्फ न अपने पति से बल्कि पूरे परिवार के किसी भी सदस्य से उसका व्यवहार मधुर न हो सका।

नतीजा यह हुआ कि वह चिड़चिड़ी हो गई। पति और पत्नी में तकरार होने लगी। पूरे घर का वातावरण तनावपूर्ण रहने लगा। राकेश भी हमेशा चिंताग्रस्त रहा करता। उसकी इसी चिंता को लक्ष्य करते हुए उसके पिता ने कहा- “बेटा, तुम्हारी बहू का दिमाग बड़ा तेज है। उससे निभना बड़ा कठिन कार्य है। परिवार में तुम्हारा एक पैसा भी खर्च करना कलह उत्पन्न करने वाला है। बेहतर तो यही होगा तुम रोज-रोज की कलह को दूर करने के लिए बहू को लेकर दूर रहो।”

“पर पिताजी, मुझे ऑफिस स्कूटर से जाने में केवल एक ही घंटा लगता है। फिर आप लोगों को छोड़ कर वहां रहना क्या ठीक होगा?” राकेश ने अपना विरोध प्रकट करते हुए कहा।

“बात ऐसी है बेटा, मनुष्य को मां-बाप और गुरुजनों का ख्याल तो रखना ही चाहिए। पर तुम भी तो विवश हो... पत्नी को भी कैसे छोड़ोगे।”

“लेकिन वैसी पत्नी को क्यों ढोना जो दिन-रात घर में कलह छाने रहे।”

“कलह या प्रीति तो ईश्वर ही लिख कर भेजता है। हम लोगों को कौन सौ-पचास साल जीना है जो रीता को तुम दुख दोगे? मेरा कहना मानो और उसे जहां काम करते हो, वहीं कोई डेरा लेकर रखो।” बाप ने अधिकारपूर्ण लहजे में राकेश को समझाया।

मां बाप को ही धरती का स्वर्ग मानने वाले पुत्र को भला यह कहां अच्छा लगता कि अनावश्यक रूप में वह सिर्फ पत्नी के लिए उन्हें छोड़ कर अलग घर लेकर रहे। बाबूजी की बातें सुन कर और भीतर घुसते ही मां को खाना बनाते देख कर उसका खून खौल उठा। वह अपने कमरे की तरफ बढ़ा तो देखा कि रीता कुर्सी पर बैठी कोई किताब पढ़ रही है।

राकेश का गुस्सा तो रोके नहीं रुक रहा था। पर ऐसी मुंहजोर पत्नी को कैसे समझाए कि तुम चुप भी हो जाओ। शादी के बाद से आज तक रीता के सौंदर्य पर मुग्ध रहने वाला पति राकेश भला पत्नी को डांटने का दुस्साहस कैसे कर सकता था! मां को खाना बनाते देख कर उसे कष्ट तो हो ही रहा था, पर रीता के सामने पहुंचने पर अपने को असमर्थ पा रहा था। दूसरी बात यह थी कि रात भी कुछ ज्यादा ही हो चुकी थी।

इस समय रीता को कुछ भी बोलना उचित नहीं समझा इसलिए चुप ही रह गया। रात को यदि रीता को

कुछ बोलता तो वह भी कहां मानने वाली थी। वह उसी समय चिल्लाना शुरू कर देती। इतनी रात को चिल्ल-पों सुनकर पड़ोसी भी बेवजह परेशान होते।

मां को मोतियाबिंद के चलते कम ही दिखाई देता था। फिर भी वह रीता के खाना न बनाने की वजह से खुद ही खाना बनाने चल पड़ी थी। बेटा और पति भूखे सो रहें, यह उसको गंवारा नहीं था। पानी का नल चौके से कुछ दूरी पर था। सब्जी में पानी डालने के लिए वह नल से पानी लाने के लिए चल पड़ी। ढिबरी की धीमी लौ में जैसे ही उसने आगे कदम बढ़ाया कि सामने पड़ी लकड़ी में उसका पैर टकरा गया और वह धड़ाम से गिर पड़ी।

मां के मुंह से एक चीख निकल पड़ी। चीख सुन कर राकेश दौड़ा हुआ आया। मां को चोट लगने से बेटे को काफी दुख हुआ और रीता पर काफी गुस्सा भी आया। लेकिन उसने इस भय से चुप रहने में भलाई समझी कि यदि वह रीता को कुछ कहेगा तो वह जल जाने की धमकी देने लगेगी।

पति और बेटे का मुंह देखकर राकेश की मां ने बस इतना ही कहा कि उसे कुछ खास चोट नहीं आई है। रीता आवाज सुन कर आई तो थी पर वह मां के द्वारा खास चोट नहीं आई है, कहना सुन कर कुछ भुनभुनाते हुए वहां से चली गई। पूरे परिवार के भीतर एक गुप्त तनाव व्याप्त हो गया।

रात में सबने थोड़ा बहुत ही खाया पर रीता ने वह भी कुछ नहीं खाया। पूरी रात में राकेश और रीता में कोई बातचीत नहीं हो सकी। इस बात का रीता को बहुत अधिक मलाल था।

रात तो बीत गई। पर सुबह होते ही रीता का बोलना चालू हो गया। रात की बातों को उसने रंग देना शुरू कर दिया। वह आंगन में जोर-जोर से बोल रही थी—“यह बुढ़िया सबको खा कर ही मरेगी। मैं कब खाना नहीं बनाती जो यह रोज शाम होते ही रसोई में घुस जाती है। यह मुझे अपने बेटे से मार खिलाने के लिए ही यह नाटक कर रही है। ऐसी सास से तो बिना सास के ही रहना अच्छा है। मेरी किस्मत फूटी थी जो ऐसे घर में आ गई...”

रीता का जोर से भकभकाना सुन कर राकेश की नींद खुल गई। वह और चुप नहीं रह सकता था इसलिए वह उसे डाटते हुए चुप हो जाने के लिए कहा। पर रीता पर तो जैसे भूत सवार था। वह और जोर-जोर से चिल्लाने लगी। सुबह-सुबह उसका चिल्लाना सुन कर पड़ोस की कुछ महिलाएं एवं बच्चे खड़े हो कर तमाशा देखने लगे।

पड़ोसियों के सामने अपनी बात को न मानते देख कर राकेश भी अपने को नहीं संभाल पा रहा था। इधर राकेश का गुस्सा बढ़ता जाता था तो उधर रीता का किसी फटे बांस की तरह चिल्लाना भी थमने वाला नहीं था। राकेश के बार-बार मना करने के बाद भी रीता चुप होने का नाम नहीं ले रही थी। तभी उसका एक जोरदार हाथ हवा में लहराया और रीता के गाल पर जा लगा।

घर के बाहर लोगों को खड़ा देख कर रीता को भारी अपमान महसूस हुआ तथा उसका पारा भी सांतवें आसमान पर जा पहुंचा। नकचढ़ी रीता को राकेश ने जीवन में पहली बार मारा था, इसलिए वह अपने विवेक में भी कैसे रहती। वह राकेश के तमाचे से ऐसी तिलमिलाई कि उसका उचित जवाब देने के लिए बेचैन हो उठी। विवेकशून्य व्यक्ति कुछ भी कर सकता है। रीता की भी स्थिति वही थी।

रीता को जीवन में पहली बार उस पति से पड़ोसियों के सामने अपमानित होना पड़ा था, जिसकी नकेल वह अपने हाथ में रखने के लिए मशहूर थी। उसने आव देखा न ताव, सामने पड़े सील-बट्टे का बट्टा उठा कर राकेश पर ऐसी फेंकी कि वह सीधे राकेश के सिर पर जा लगा।

राकेश तो राकेश उसके सामने खड़े लोग भी इस बात की कल्पना नहीं कर पाए थे कि पत्नी भी पति के ऊपर



हाथ उठाएगी। चोट भी भारी भरकम पत्थर से लगी थी। नतीजा यह हुआ कि वह संभल नहीं सका और धड़ाम से जमीन पर गिर पड़ा।

तमाशाबीनों में से तो कुछ डर कर भाग खड़े हुए। कुछेक ने हिम्मत कर के राकेश को पकड़ा। माथे में गंभीर चोट लगने की वजह से वह अज्ञान हो गया था। बूढ़ा बाप छाती पीटने लगा।

रीता ने अभी तक नीचे नहीं देखा था। अभी तक वह बोलने में इतना पागल हो रही थी कि उसकी नजर नीचे नहीं उतर पा रही थी। वह तो अब और चिल्लाने लगी थी। गांव के ही एक नवयुवक रीता को इतने पर भी चुप नहीं होने पर इतनी जोर से डांटा कि उसकी सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई। उसने एक भद्दी गाली के साथ रीता को मार डालने के धमकी दे डाली।

इस बार रीता का ध्यान नीचे गया जहां राकेश के सिर से बहते खून ने आसपास की धरती लाल कर दी थी। उसे देख कर रीता को काटो तो खून नहीं।

“हाय! मैं क्या कर बैठी! उसके हृदय में हाहाकर मच गया। उसने राकेश की तरफ जाने लिए कदम बढ़ाया ही था कि लोगों ने उसे पकड़ लिया। लोगों को यह संदेह हो गया कि कहीं यह कुछ और अनिष्ट न कर बैठे। लोगों द्वारा पकड़ लिए जाने पर उसने हिस्टीरियाई आवाज में चिल्लाना शुरू कर दिया।

उसके मुंह से हाय मैंने यह क्या कर डाला, अपने ही पति को मार डाला कि जगह घबड़ाहट एवं चिंता में उसे क्या बोलना है इसका ज्ञान नहीं रह गया था। लोगों ने सोचा कि कहीं गुस्से में यह कुछ और अनिष्ट न कर बैठे। शायद यह क्रोध में पागल हो गई है और इस समय यह कोई और भयानक कांड भी कर सकती है। इसलिए कोई उसे राकेश के नजदीक नहीं पहुंचने दे रहा था।

रीता ने सपने में भी यह नहीं सोचा था कि वह अपने गुस्से में ऐसा भी कांड कर बैठेगी जो उसे कहीं का नहीं रखेगा। इस समय उसके मन में अपने कृत्य पर गहरा दुःख था, पर लोग उसे खूनी समझ रहे थे। वह इस नाजुक दौर में पति के पास भी नहीं जा पा रही थी। लोगों का ध्यान राकेश की तरफ था। अस्पताल पहुंचाने की तैयारी की जाने लगी। इधर लोग अभी रास्ते में ही थे कि मां का भय, अपमान और दुख के कारण हार्ट फेल हो गया।

अस्पताल में थोड़ी चिकित्सा के उपरांत ही राकेश को होश आ गया। पर उसकी स्मृति चली गई। उसने किसी को भी पहचानने से इंकार कर दिया। बाप के मुंह से भी रुलाई फूट पड़ी। जवान बेटा उसे पहचान नहीं रहा है। पत्नी तो सुखदायी होती है पर यह क्या हो गया। वह अस्पताल में पागलों की तरह हरकत कर रहे थे कि कुछ लोग वहां आ पहुंचे। वे राकेश के पिता को घर लेकर आने लगे।

राकेश की हालत देख कर तो उस बूढ़े बाप को रोना आया था पर घर आने पर कफन में लिपटी पत्नी को देख कर वह सन्न रह गया।

रीता के बहुत अधिक छटपटाने एवं अंटशंट बकने की वजह से लोगों ने उसे एक कमरे में जबरदस्ती बंद कर दिया था। उसे अब कमरे से आजाद कर दिया गया। वह सामने सास की लाश देखकर एक बार कांप गई। उसे होश नहीं रहा कि वह क्या करे? वह सास के कदमों पर गिर पड़ी। बड़ी रोई उसका गरूर गल गया था। उसके बार-बार माफी मांगने पर भी अब उसे माफ कौन करता! वह तो दुनिया ही छोड़ चली थी।

जब होश आया तो वह राकेश को देखने अस्पताल की ओर भागी। रास्ते में गांव के बच्चों ने उस पर पत्थर



फेंकने शुरू कर दिए। दौड़ते हुए कई बार साड़ी में उलझ कर गिर पड़ती। पर वह बदहवास सी अस्पताल में राकेश को देखते ही उसके कदमों पर गिर कर मांफी मांगने लगी। पर राकेश तो उसे पहचान ही नहीं रहा था*

बार-बार मांफी मांगने पर राकेश ने कहा-“ये मेम साहब! यह आप क्या कर रही हैं? आप कौन हैं और हमसे मांफी क्यों मांग रही हैं?”

“मैं, मैं...क्या तुम मुझे पहचानना भी नहीं चाहते ... क्या तुम मेरी गलतियों को माफ नहीं करोगे...?” और न जाने क्या-क्या बकती रही। तभी सामने से नर्स ने प्रवेश किया और राकेश को परेशान करते देख कर रीता के पास पहुंची। वह बोली-“आप क्या कर रही हैं? जानती नहीं, सिर में चोट लगने की वजह से यह किसी सगे-संबंधी को भी पहचान नहीं पाएगा। इसकी स्मृति चली गई है।

“तुम कौन हो ? क्या तुम जानती नहीं हो इसकी हालत इसकी पत्नी ने ही की है। औरत नहीं, वह डायन है। डायन भी सात घर छोड़ कर अपना जादू चलाती है, पर इसकी औरत तो...।”

रीता बुक्का फाड़कर रो उठी- “मुझे जला दो, मैंने ही वह पाप किया है। मेरी वजह से पति की स्मृति चली गई है...।” नाना प्रकार के उसके प्रलापों से पूरा अस्पताल आक्रांत हो उठा। बाद में कई लोगों ने उसे पकड़ कर अस्पताल परिसर से बाहर निकाला।

रीता का पश्चाताप देख कर राकेश के बाप ने तो उसे घर में रहने की अनुमति दे दी पर वह घर अब पहले का घर नहीं था। राकेश पति होते हुए भी रीता की छाया से दूर रहना चाहता था। उसे पिछली बातें अब तो याद ही नहीं थी इसलिए वह रीता को पत्नी मानने को तैयार नहीं था। छत तो एक ही थी, पर वह उन तीन जीवों के लिए किसी कैदखाने से कम नहीं था।

राकेश के बाप ने भले ही रीता को माफ कर दिया था पर वह यह सदमा बहुत दिनों तक नहीं झेल पाए। साल भर के भीतर ही उनकी ईहलीला भी समाप्त हो गई। राकेश की स्मृति वापस लाने के लिए रीता ने न किसी व्रत पूजा पाठ को छोड़ा, न ही दवा दारू की ही कमी की। जिसने जो बताया, वही उसने किया पर कोई लाभ नहीं होता था।

इस घटना को बीते हुए सात साल बीत गए। रीता के अपराधबोध ने उसकी कंचन काया को कौड़ी के मोल कर डाला था। उसे समाज का हर आदमी नफरत की दृष्टि से देखता। पति को यह याद नहीं था कि वह उसकी पत्नी थी। हर जगह से दुत्तकार सहने के अलावा रीता के लिए कोई दूसरा रास्ता नहीं था जो राकेश को छोड़ती।

पर दुखों को झेलते हुए रीता ने अब तक बहुत प्रायश्चित्त कर लिया था। भगवान के घर देर है, अंधेर नहीं है, कहावत चरितार्थ हो गई उस दिन जब रीता स्वयं उसी आंगन में फिसल कर गिर पड़ी। यह भी एक संयोग ही था कि वह सील बट्टा भी वहीं रखा हुआ था। रीता का सर सील बट्टे पर पड़ा और उसे काफी गहरी चोट आई। उसके मुंह से एक चीख निकली जिसे सुन कर राकेश दौड़ कर बाहर से आंगन में आया। रीता का सर फूट गया था और माथे से बह रहे खून से फिर वहां के आंगन की धरती लाल हो रही थी।

खून देख कर राकेश के मुंह से बड़ी भयानक चीख निकली और वह गिर कर बेहोश हो गया। पड़ोस के लोगों ने रीता को संभाल लिया था। उसके माथे पर पट्टी बांध दी गई थी। थोड़ी देर बाद राकेश को होश आया। उसने सबसे पहले ‘मां’ कहकर पुकारा। फिर धीरे-धीरे अपनी आंखें खोलीं और उसकी खो गई स्मृति फिर से वापस मिल गई थी।

उसने चेतना में आते ही रीता से पूछा-“सील बट्टा तो तुमने मुझ पर चलाया था पर चोट तुम्हें कैसे लग गई?

रीता अपने सिर में लगी गहरी चोट का सारा दर्द भुल कर राकेश के गले जा लगी। उसका प्रायश्चित्त सफल हो गया था। तभी तो उसके पति की सात बरस पहले खोई स्मृति आज वापस मिल गई थी।

एजी ओजी

एजी ओजी मिल गए
टू जी हो गए गायब
श्री जी के बाद में भैया
फोर जी हो गए नायब
सड़क बेचारी हरदम रोती
सारा भार है क्यों मुझ पर
थोड़ा सा तो चलो उधर भी
अलकतरा पीने वाले पर

पुस्तक कहती क्यों पढ़ते हरदम
बोर हुई जाती हूं जी
थोड़ा सा तो पढ़ लो उसको
जो नाम में उड़ता है जी
परसेंटेज कहता ऐसे बोलो
पीसी नाम सुघड़ मेरा
अंदर बाहर नीचे ऊपर
दास है मेरा जग सारा

कोयला बेचारा हरदम रोता
क्यों अब हमें जलाते हैं
अब तो उसे जलाओ प्यारे
जो भी मुझको खाते हैं
दवा बेचारी जोर से कहती
रोग न मुझसे डरता
खाना ही हो अगर दवाई
राम नाम लो भर्ता

बालू बेचारा कितना प्यारा
चैन से सोता था डटकर
ना जाने अब कौन देश में
कहां लगाना घनचक्कर

बेटी धरती का वरदान

बेटी धरती का वरदान
बढ़ाती अपने कुल की शान
बनाती अपनी खुद की पहचान
बेटी धरती का वरदान ।

चलो अब हम अपनी सुधारें भूल
आगे बढ़ें मिटाएं मानवता का शूल
जरूर से जरूर भेजें बेटी को स्कूल
ताकि खेल पाएं उसके चेहरे पर फूल

नहीं है बेटियां अब दया के पात्र
नहीं है वह केवल मानव मात्र
है वह हमारी ही संतान
चलो बनाएं उसे सृष्टि का वरदान

आगे आर्यें निभाएं अपना धर्म
कुछ तो अब करें सत्कर्म
ओके अब इस पर दुष्कर्म
यही है इस मानवता का मर्म

प्रकृति का सुंदर उपहार
आओ करें उसका सम्मान
बेटी है धरती का वरदान
बेटी है धरती का वरदान

— शुभी प्रज्ञा

दिन दूनी रात चौगुनी
जुमला हुआ पुराना
एक ही रात में बढ़ता है
अब सो सो गुना खजाना

राजकोष है बिल्कुल खाली
राजा के घर रोज दिवाली
चाहे दुनिया भाड़ में जाए
खाना है नित खोआ मलाई

— शैलेंद्र राम

हिंद की भाषा हिन्दी

हिन्दी हिन्द की भाषा है
हर दिशा में इसे पनपने दो
चढ़कर हिमाद्रि के शिखर पर
इसे अपने आप दमकने दो

जन जन की भाषा हिन्दी है
कण कण की भाषा हिन्दी है
मंदिर मस्जिद गुरुद्वारे की
आराध्य की भाषा हिन्दी

व्यवहार की भाषा हिन्दी है
सब सत्कार की भाषा हिन्दी है
किसी रूपसी के सोलह
श्रृंगार की भाषा हिन्दी है

फूलों की अभिलाषा हिन्दी है
भारत की परिभाषा हिन्दी है
कबीर, तुलसी और मीरा के
भजनों की भाषा हिन्दी है

भारतीय सभ्यता संस्कृति की
पहचान की भाषा हिन्दी है
हर भारतवासियों के
स्वाभिमान की भाषा हिन्दी है

तहरीर की भाषा हिन्दी है
तवारिख की भाषा हिन्दी है
तहजीब की भाषा हिन्दी है
तरन्नुम की भाषा हिन्दी है

विजय अभियान की भाषा हिन्दी है
राष्ट्रगान की भाषा हिन्दी है
प्रगति उत्थान की भाषा हिन्दी है
जन जन की भाषा हिन्दी है।

— विजय कुमार

अहले वतन

अहले वतन अब हम तुझे सलाम करते हैं
अपनी दुआओं में हम तुम्हें हरदम याद करते हैं
जिनके खूं से जो यह आजादी के दिए जले हैं
उन शहीदों को हर सांस में हम याद करते हैं।

न छू सकेगा दामन कोई बड़ा तूफान आ कर
यह जलता रहेगा चिराग शहीदों के मजार का
चाहे हिल उठे हिमालय टूट गिरे सितारे
आया है मौसम फर्जे बहार का

बस मेरी अब एक ही आरजू है ऐ मालिक तुझ से
जन्म लूं बार-बार इस धरती पे हम यह फरियाद करते हैं
अखंड कश्मीर की धरती पर तिरंगा सदा हम लहराएंगे
ऐ दुश्मनों हम तुझे अभी से यह आगाह करते हैं

न सोचो कश्मीर की यह सरजमी तुम्हारा है
हमारे पुरखों ने इसे बड़े जतन से संवारा है
हमारे देश की एकता और अखंडता में दार डालने वालों
तुम्हारे बद इरादों को हमारी एकता ने नकारा है

कदम अब तो आगे बढ़ चुके हैं कोई न रुकने पाए
रुख दरिया का भी हम मोड़ देंगे मोड़ कर दिखा देंगे
अगर कोई चक्रवात भी आए तो उसे बंधक बना डालें
हर हाल में अपनी मंजिल तक पहुंच कर हम दिखा देंगे

तिरंगे की शान को अब हम कभी मिटने न देंगे
पराक्रम है हमारा यही एलान करते हैं
हमारे लहू का हर एक एक कतरा
जननी जमीं तेरे नाम करते हैं

— विजय कुमार

मालदा मंडल पर रेलों के सुरक्षित परिचालन को सुनिश्चित करने एवं लोगों में जागरूकता फैलाने के उद्देश्य से आयोजित संरक्षा संगोष्ठी के दृश्य

